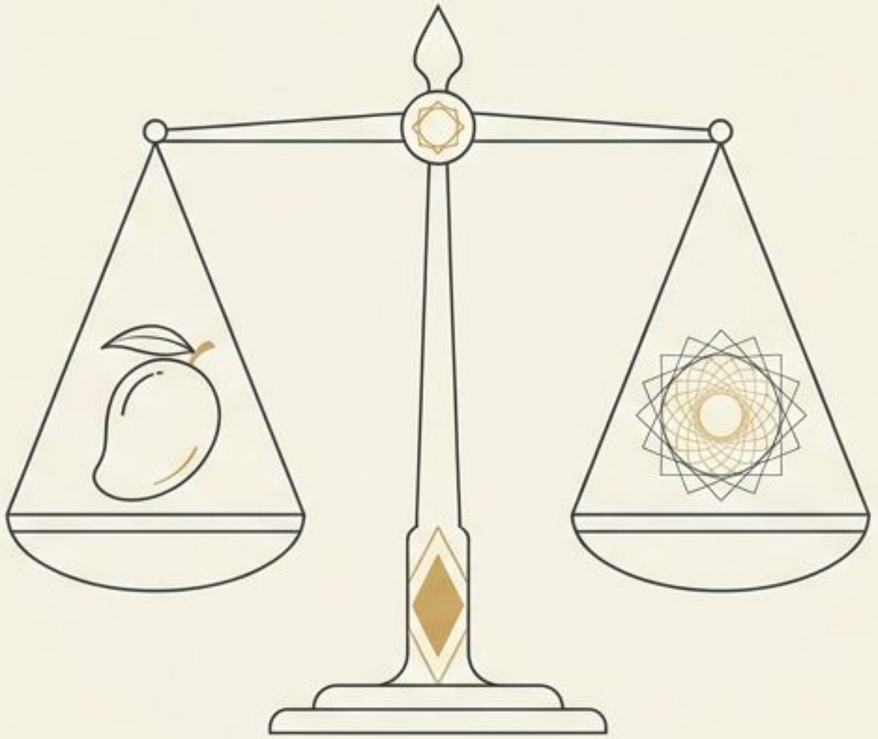

न्याय का दरबार: प्रमाण, नय और परीक्षा

जैन न्याय दीपिका (1.6-7) के आधार पर ज्ञान, निर्णय और आनन्द की रूपरेखा।

www.JainKosh.org

₹20 के आम की परीक्षा, लेकिन अपनी आत्मा की नहीं?

लौकिक परीक्षा

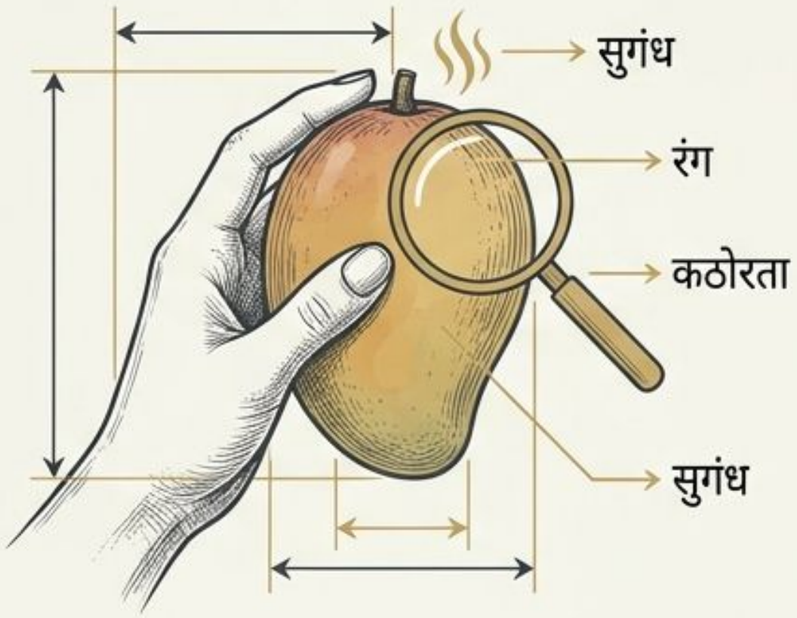

लौकिक परीक्षा: बाजार में हम एक आम खरीदते समय 20 सेकंड लगाते हैं। हम उसका रंग देखते हैं, सुगंध सूंघते हैं, और कठोरता जांचते हैं।

आध्यात्मिक अज्ञान

आध्यात्मिक अज्ञान: हम जीवन के सर्वोच्च सत्य—आत्मा, सुख, धर्म और उद्देश्य—को बिना विचारे केवल दूसरों के कहने पर मान लेते हैं।

जो सूक्ष्मतत्व हमारे परम हित से जुड़ा है,
क्या उसकी परीक्षा लौकिक वस्तुओं से अधिक नहीं होनी चाहिए?

www.JainKosh.org

परीक्षा क्या है? (न्यायाधीश की भूमिका)

[विरुद्ध नाना युक्तियां]

(आम मीठा है या खट्टा?
आत्मा शरीर है या चेतन?)

[प्राबल्य-दौर्बल्य अवधारण]

(कौन सा तर्क मजबूत है और
कौन सा कमजोर?)

[प्रवर्तमान विचार]

परीक्षा

(सक्रिय ज्ञानात्मक प्रक्रिया। यह रटा
हुआ ज्ञान नहीं, वर्तमान निर्णय है।)

हम सब न्यायाधीश (Judge) हैं। हमारा काम किसी के कहने मात्र से सत्य को स्वीकारना नहीं, बल्कि साक्ष्यों की प्रबलता और दुर्बलता के आधार पर न्याय करना है।

www.JainKosh.org

विचार का सूत्र: 'एवं चेत एवं स्यात'

लक्षण (अवलोकन)

एवं चेत एवं स्यात (सकारात्मक)

- **भौतिक**: यदि आम का रंग पीला है, तो वह मीठा होगा।
- **आध्यात्मिक**: यदि इसमें चेतना (Consciousness) है, तो यह आत्मा होगी।

एवं चेत एवं न स्यात (नकारात्मक)

- **भौतिक**: यदि बादल नहीं हैं, तो बारिश नहीं होगी।
- **आध्यात्मिक**: यदि केवल शरीर (स्पर्श-रस-रूप) है, तो वह आत्मा नहीं हो सकता (पुद्गल है)।

सत्य तक पहुँचने के लिए केवल लक्षणों को देखना पर्याप्त नहीं है;
उनका दोनों दिशाओं (सकारात्मक और नकारात्मक) में परीक्षण अनिवार्य है।

www.JainKosh.org

ज्ञान का फल: परीक्षा के तीन परिणाम

निर्णय (परीक्षा द्वारा ज्ञान)

उपादान (ग्रहण)

सत्य ज्ञान, संवर, और निर्जरा को ग्रहण करना। (जैसे: मीठे, पके हुए आम को अपनी टोकरी में रखना)।

हान (त्याग)

आश्रव, अज्ञान, और दुःख के कारणों का त्याग। (जैसे: सड़े हुए आम को हटाना)।

उपेक्षा (तटस्थता)

अजीव और पर-पदार्थों से तटस्थता। (जैसे: जो आम हमारी टोकरी का हिस्सा ही नहीं है, उसे अनदेखा कर देना)।

ज्ञानस्य फलं हानोपादानोपेक्षा (बिना परीक्षा किए गलत वस्तु का ग्रहण या त्याग करने से अंततः दुःख ही मिलेगा)।

www.JainKosh.org

ज्ञान की सीढ़ियाँ: प्रमाण बनाम नय

	नय (आंशिक सत्य)	प्रमाण (पूर्ण सत्य)
स्वरूप	किसी वस्तु के एक अंश या पर्याय को जानना।	वस्तु को उसके समग्र (नित्यानित्य) रूप में जानना।
विषय	अवयव विषय (केवल एक अंग)।	समुदाय विषय (संपूर्ण वस्तु)।
स्थान	यह प्रमाण से उत्पन्न साधन है।	यह प्रधान (माता) है, स्वयं साध्य है।
दृष्टांत	केवल शिखर या झंडा देखकर मंदिर का अनुमान।	संपूर्ण मंदिर (शिखर, प्रतिमा, प्रशस्ति) का समग्र ज्ञान।

नय स्वयं के लिए नहीं हैं। नय का प्रयोग केवल प्रमाण (संपूर्ण सत्य) की उत्पत्ति के लिए किया जाता है।

www.JainKosh.org

चरम लक्ष्य: हम यह सब क्यों कर रहे हैं?

सम्पूर्ण जैन न्याय (परीक्षा, नय, और प्रमाण) का एकमात्र प्रयोजन बौद्धिक विवाद जीतना नहीं, बल्कि अज्ञान के दुःख को मिटाकर आत्मा में 'आनन्द' की उत्पत्ति करना है।

www.JainKosh.org